SUBJECT :- GEOGRAPHY

CLASS : B.A. Part I[st] (Hons.), PAPER : I[st], UNIT : II[nd].

TOPIC : THEORIES OF MOUNTAIN BUILDING (पर्वत-निर्माण के सिद्धान्त)

AUTHOR : Dr. Sanjay Kumar, Assistant Professor, Dept. of Geography, D.B. College, Jaynagar, Madhubani, L.N.M.U. Darbhanga.

LECTURE NO. - 06

पृथ्वी के प्रारंभिक भूगर्भिक इतिहास में पर्वत-निर्माण की प्रक्रिया, बाद वाली प्रक्रिया से सम्भवत: भिन्न रही होगी। अर्थात् प्रारंभिक समय में सम्भवत: पर्वतो के निर्माण की क्रिया एक साधारण प्रक्रिया रही होगी जिसके अन्तर्गत पर्वतो का सृजन भूपटल में संकुचन तथा मरोड़ उत्पन्न होने से हुआ होगा परन्तु बाद में भूसन्नतियों में तलछटीय जमाव के पश्चात् पर्वत-निर्माण दबाव की शक्ति से प्रेरित होकर वलन की क्रिया द्वारा हुआ होगा।

→ वर्तमान समय में प्लेट विवर्तन सिद्धांत के आधार पर यह स्पष्ट हो गया है कि प्रत्येक भूगर्भिक काल मे पर्वत-निर्माण की प्रक्रिया एक जैसी ही रही है।

→ अधिकांश पर्वत महाद्वीपीय किनारो के समानान्तर सागर के सामने स्थित है — रॉकीज, एण्डीज, अल्पाइन, एटलस पर्वत केवल हिमालय इस प्रणाली के अन्तर्गत नहीं आ पाता है।

→ पर्वत-निर्माण के सिद्धांतो को दो वर्गों मे रखा जा सकता है —

(1) धरातलीय क्षैतिज गति के कारण

(2) लम्बवत् या ऊर्ध्वाकार गति के कारण।

→ 1960 के बाद से प्लेट विवर्तन सिद्धान्त के आधार पर भूपटल के विभिन्न युगो के सभी प्रकार के पर्वतो के निर्माण की समस्या का निदान हो गया है तथापि ऐतिहासिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण से अन्य सिद्धान्तो का विश्लेषण आवश्यक है—

Scanned with CamScanner

1) कोबर का पर्वतनिर्माणक भूसन्नति सिद्धान्त –

कोबर के अनुसार प्राय: प्रत्येक पर्वत निर्माण के पहले भूसन्नति का निर्माण होता है जिसमें लगातार अवसादीय निक्षेप तथा भूसन्नति की तली का तलक्षयीय भार के कारण अवतलन होता है। अधिक जमाव हो जाने के बाद पर्वत-निर्माण का समय आता है जिस समय भूसन्नति के दोनों पार्श्व अथवा अग्रदेश एक दूसरे की ओर खिसकने लगते हैं जिस कारण से मोड़ों का निर्माण होता है। पर्वतीकरण के समय ही अत्यधिक सम्पीड़न के कारण ज्वालामुखी-क्रिया तथा रूपान्तर की क्रिया होती है जिस कारण पर्वत की संरचना में जटिलता आने लगती है। पर्वत-निर्माण के बाद उसका अनाच्छादन प्रारम्भ हो जाता है जिस कारण उत्थित पर्वत पिस कर पेनीप्लेन में परिवर्तित हो जाता है। इसके बाद पुन: भूसन्नति का निर्माण होता है तथा उपर्युक्त घटनाओं की पुनरावृत्ति होती रहती है।

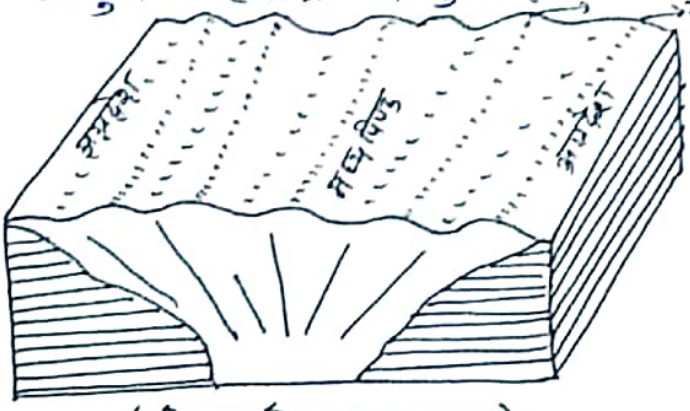

(कोबर के आधार पर)

- पहली अवस्था :– भूसन्नति अवस्था (Lithogenesis) – भूसन्नति में अवसादीय जमाव तथा भूसन्नति में धसाव
- द्वितीय अवस्था :– पर्वत-निर्माणकारी अवस्था (Orogenesis) — भूसन्नति के दोनों अग्रदेश एक दूसरे के निकट खिसकने लगते हैं।

2) जेफरीज का तापीय संकुचन सिद्धान्त –

जेफरीज ने बताया है कि पृथ्वी के प्रारम्भिक इतिहास से ही उसके ताप में ह्रास हो रहा है जिस कारण पृथ्वी ठंडी होकर सिकुड़ती जा रही है। इसी सिकुड़न के कारण संकुचन बल द्वारा पर्वतों का निर्माण होता है।

Scanned with CamScanner

→ जेफरीज द्वारा प्रयुक्त बलों को दो वर्गों में रखा जा सकता है —

(1) पृथ्वी अपने प्रारम्भिक वृहद आकार से सिकुड़न के कारण छोटी होती गई। इस प्रकार सिकुड़ने द्वारा बल (Force of Contraction) उत्पन्न होता है।

(2) द्वितीय प्रकार का संकुचन पृथ्वी की परिभ्रमण गति से ह्रास होने के कारण उत्पन्न होता है।

जेफरीज के सिद्धान्त को अनेक विद्वानों ने आधारहीन तथा महत्वहीन करार दिया है। वास्तव में संकुचन तथा प्रवाह सिद्धान्त एक दूसरे के इतने विपरीत है कि उनमें से किसी एक को मान्यता देना उचित नहीं जान पड़ता। वर्तमान समय में प्लेट विवर्तन सिद्धान्त के आधार पर महाद्वीपीय प्रवाह एक वास्तविकता हो गया है।

Scanned with CamScanner